Creationism (सृष्टिवाद) —

विश्वविज्ञान (Cosmology) का मुख्य उद्देश्य मानव की विश्व संबंधी जिज्ञासा को शांत करना है। देश और काल में स्थित संपूर्ण पदार्थों की समष्टि को ही विश्व कहते हैं। इसमें चार प्रकार के पदार्थ पाए जाते हैं — जड़, जीव, चेतन तथा आत्मचेतन। विश्व के सभी पदार्थ परिवर्तनशील दीख पड़ते हैं। विश्व संबंधी दो मुख्य प्रश्न उठते हैं —

(a) विश्व की उत्पत्ति कैसे हुई और
(b) विश्व का स्वरूप जो आज है, वैसा आरंभ से है या उसमें कुछ परिवर्तन हुआ है? इन प्रश्नों के उत्तर हो सकते हैं। इस कारण दो सिद्धांतों सिद्धांतों का उदय होता है —

(a) सृष्टिवाद (Theory of Creation), और
(b) विकासवाद (Theory of Evolution)।

सृष्टिवाद के अनुसार ईश्वर ने विश्व की सृष्टि की और विश्व का स्वरूप जो आज है, वह आरंभ से ही इस प्रकार का है, अर्थात विश्व अपरिवर्तनशील है। विकासवाद के अनुसार विश्व का वर्तमान रूप क्रमिक परिवर्तनों का फल है। यह परिवर्तन वास्तविक है, न कि

मिथ्या!

सृष्टिवाद के अनुसार विश्व अनादि नहीं कहा जा सकता। इसकी उत्पत्ति हुई है और यह उत्पत्ति ईश्वर द्वारा हुई है। ईश्वर सर्वशक्तिसंपन्न, सर्वज्ञ, सर्वांतर्यामी, असीम एवं अनंत है। सृष्टि के पहले विश्व का अस्तित्व नहीं रहता। ईश्वर की सृष्टि करने की इच्छा होती है और तुरंत सृष्टि हो जाती है। विश्व का स्वरूप जो आरंभ में था, वही आज भी है। चूँकि ईश्वर ने ही विश्व के पदार्थों की रचना की है, इसलिए पदार्थों में जो भेद है, वह पारमार्थिक है। यह भेद कभी नष्ट होनेवाला नहीं है। मनुष्य न घोड़ा हो सकता है और न घोड़ा मनुष्य। सृष्टिवाद के अनुसार विश्व में परिवर्तन नहीं होता। परिवर्तन तो मिथ्या है।